जन प्रेरित अभियान .
सर्मथ बस्तर के लिए लोक नियोजन

1. जन सहभागिता आधारित जिम्मेदार पर्यटन

बस्तर का एक पर्यटक स्थल के रूप में विकसित होने की अपार संभावनाएं हैं। इसका आकर्षण ज़िले में उपस्थित निम्न विशेषताओं में निहित है।

- घने जंगल, झरने और नदियों के साथ प्राकृतिक सुंदरता के अलावा स्वास्थ्यप्रद जलवायु।
- विभिन्न प्राचीन स्मारक, मंदिर, स्थानीय शिल्प और कला, दशहरा, गोना और मड़ई सहित अनेक त्यौहार एवं लोकोत्सव।
- मूल्य और संस्कृति पर आधारित आदिवासी जीवन शैली– इसे बाकी आबादी द्वारा अपनाई गई जीवन शैली से अलग परिदृश्य में पेश कर सकते हैं।

1.1.क्षमतायें और संभावनाएँ

यह आश्चर्य की बात है कि असाधारण प्राकृतिक सुंदरता वाले कुछ स्थान अभी भी देश के आम पर्यटकों को ज्ञात नहीं हैं। बस्तर क्षेत्र, और छत्तीसगढ़ राज्य को एक पर्यटन स्थल के रूप में अभी तक पूर्ण रूप एवं अपेक्षित स्वरुप में प्रचारित नहीं किया गया है । यह एक तरह से प्रकृति का आशीर्वाद भी हो सकता है। पर्यटन सुविधाओं के अव्यवस्थित विस्तार और पर्यटकों के गैर जिम्मेदाराना रवैये ने भारत के प्राचीन वातावरण और आकर्षण पर एक हानिकारक प्रभाव डाला है। बढ़ते मध्यम वर्ग और उच्च वर्ग की बढती आय के साथ आने वाले दिनों में इस तरह के अवसरों के बढने की अपार संभावनाए हो सकती है। छत्तीसगढ़ या बस्तर की अल्प विकसित पर्यटन क्षमता एक उच्च पर्यटक प्रवाह एवं पर्यावरण के संरक्षण के लिए एक अच्छा अवसर प्रदान करता है किन्तु इसके लिए कुछ एहतियाती कदम भी उठाने होंगे।

छत्तीसगढ़ में सरकार ने पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कई उपाय किये हुए हैं किन्तु आगे भी पर्यटन की संभावनाओं के दोहन की काफी गुंजाइश है। आदिवासी जीवन के अनुभव, जंगलों में प्रवास का अवसर, स्वदेशी उत्पादन और व्यंजनों आदि को बढ़ावा देने के लिए इस क्षेत्र में विशेष गुंजाइश है। जिम्मेदार पर्यटन–प्रकृति एवं पर्यावरण को कम से कम नुकसान पहुंचाते हुए इनके संरक्षण पर आधारित पर्यटन के बुनियादी ढांचे के निर्माण की प्रक्रिया का एक मुख्य आधार है।

जन भागीदारी के अभिनव उपायों के साथ, पर्यटन और संबंधित सेवाएं लोगों को समान और स्थायी तरीके से आजीविका प्रदान करने के प्रमुख साधनों में से एक हो सकती हैं। यह स्थानीय कृषि और वन उपज को बढ़ावा देने के साधन के रूप में भी काम कर सकता है।

1.2. मौजूदा योजनाएँ और व्यवस्थाएँ

बस्तर में पर्यटन के लिए आधारभूत संरचना और सुविधाएं सीमित हैं। आमतौर पर भारत में पर्यटन यात्रा, आराम, भोजन, लागत और सुरक्षा की सुविधा के विचारों से अधिक प्रभावित है। औसत भारतीय पर्यटक एक अलग जीवन शैली या रोमांच के अनुभव के प्रस्ताव से आकर्षित नहीं होता है (हालांकि यह नई पीढ़ी के साथ ऑफ–बीट गंतव्यों और विविध अनुभवों को पसंद करते हुए बहुत हद तक बदल रहा है)। बस्तर अपने सीमित बुनियादी ढाँचे और कनेक्टिविटी के साथ–साथ आराम देने वाली सुविधाओं की कमी के कारण लोकप्रिय पर्यटन स्थल के रूप में प्रचारित नहीं हुआ है। सुरक्षा जोखिमों की धारणा ने भी पर्यटकों की कम आवक में अपना योगदान दिया है।

राज्य सरकार की एजेंसिया विज्ञापनों एवं सूचना चैनलों आदि के माध्यम से बस्तर के लोकोत्सव एवं पर्यटन को बढ़ावा देती है। छत्तीसगढ़ पर्यटन को एक विशेष ब्रांड के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करने की अच्छी गुंजाइश मौजूद है।

पर्यटन को बढ़ावा देने के सरकारी प्रयासों के अलावा, पर्यटकों को सेवाएं प्रदान करने के लिए निजी उपक्रम भी शुरू किए जा सकते हैं। होटल, रेस्तरां और ट्रैवल ऑपरेटरों जैसे सामान्य सेवा प्रदाताओं के अलावा, एक सामाजिक उद्यम जो पर्यटकों के लिए अनुकूलित पैकेज प्रदान करता है जिसमें आदिवासी संस्कृति का अनुभव प्रदान करना शामिल है। कुछ व्यक्तिगत उद्यमी भी हैं जो आदिवासी गांवों में पर्यटकों के लिए घर में रहने की ब्यवस्था करते हैं।

1.3. क्षमताओं की कम उपलब्धि के कारण

1.3.1. नियंत्रण का पैटर्न

बस्तर में पर्यटन का बुनियादी ढांचा उसकी क्षमता की तुलना में नगण्य और अपर्याप्त है। बस्तर में पर्यटन की संभावनाओं को सार्वजनिक करने के लिए जो भी प्रयास किए जा रहे हैं वे ज्यादातर सरकारी पर्यटन एजेंसियों के माध्यम से ही हैं जिनमें निजी उद्यमी के कुछ पूरक प्रयास ही शामिल हैं। निजी उद्यमियों ने अभी तक छत्तीसगढ़ के पर्यटन प्रोत्साहन के लिए कोई बड़ा निवेश नहीं किया है और न ही कोई बड़ा बुनियादी ढांचा खड़ा किया है। निजी क्षेत्र में प्रयास ज्यादातर व्यक्तिगत उद्यमियों द्वारा होते हैं न की किसी प्रसिद्ध कॉर्पोरेट संस्थाओं द्वारा।

बस्तर में वामपंथी उग्रवाद (नकशल) की उपस्थिति के कारण सुरक्षा के अपर्याप्त साधन पर्यटन को बढ़ावा देने में एक प्रमुख अवरोध है। हालांकि वामपंथी उग्रवाद की उपस्थिति कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित है और शेष क्षेत्र में पर्यटन को निश्चित रूप से बढ़ावा दिया जा सकता है। पर्यटन में स्थानीय लोगों की बहुत अधिक हिस्सेदारी नहीं है। आमतौर पर पर्यटन क्षेत्रों में स्थानीय लोगों की हिस्सेदारी स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते हैं। बस्तर को एक पर्यटन स्थल के रूप में बढ़ावा नहीं दिया गया है जिसके कारण न तो स्थानीय लोगों को पर्यटन से बड़े पैमाने पर लाभ मिलता है और न ही पर्यटन के बुनियादी ढांचे और सुविधाओं के निर्माण से संबंधित मामलों में उनकी भागीदारी एवं हिस्सेदारी है।

1.3.2. संस्थागत क्षमता

पर्यटन स्थल का विकास विभिन्न हित धारकों के प्रयासों का संगम होता है। यह सरकार के विभिन्न अंगो के साथ ही निजी क्षेत्रों के विभिन्न हित धारकों की भागीदारी से ही संभव है। पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए जिम्मेदार सरकारी एजेंसियों के प्रत्यक्ष प्रयासों के अलावा अन्य क्षेत्रों में सरकार द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका जैसे कि बुनियादी ढांचे का प्रावधान, विभिन्न सेवा प्रदाताओं का विनियमन और पर्यटकों की सुरक्षा का अश्वासन भी उतना ही महत्वपूर्ण है। एक सक्षम इको–सिस्टम का निर्माण करने में सरकार के समुचित प्रचार प्रयासों के अलावा, निजी क्षेत्र के निवेश और उनके द्वारा प्रदत्त विभिन्न प्रकार की सुविधाओं का होना आवश्यक है।

जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है कि सरकारी एजेंसियों ने पर्यटन की संभावनाओं के अनुरूप कोई संस्थागत या ढांचागत व्यवस्था नहीं बनाई है और ना ही निजी क्षेत्र के हित

धारकों ने पर्यटकों के लिए कोई बड़ी सुविधाएं स्थापित की हैं। हालांकि सरकार द्वारा पड़ोसी कोंडागांव जिले में तीन एकड़ के क्षेत्र में एक जनजातीय पर्यटक गांव स्थापित किया जा रहा है जिसका उद्देश्य पर्यटकों को जनजातीय जीवन का अनुभव प्रदान कराना है।

1.3.3. वित्तीय प्रावधान की पर्याप्तता

पर्यटन के लिए किसी बड़े निवेश की अनुपस्थिति और पर्यटन क्षेत्र में गतिविधियो के निम्न स्तर के परिणामस्वरूप क्षेत्र में बड़े वित्तीय निवेशों की मांग सीमित हुई है। एक अवरोधक के रूप उपलब्ध जिले के कुछ हिस्सों में नकशल की मौजूदगी, बस्तर में पर्यटन के लिए किसी बड़े निवेश की संभावनाओं को क्षीण करती है। यह स्थानीय आबादी की भागीदारी के साथ पर्यटकों को सुविधाएं प्रदान करने वाले छोटे उपक्रम को शुरू करने का अवसर प्रदान करता है। ऐसी सुविधाओं के लिए बहुत अधिक वित्तीय आवश्कता नहीं होती है। अतः इस अवसर का सही मूल्यांकन कर उचित पहल करने की आवश्कता है।

1.3.4. प्रस्तावित पहल

सरकार या निजी क्षेत्र द्वारा आज तक पर्यटन के बुनियादी ढांचे की स्थापना में किसी भी बड़े निवेश की अनुपस्थिति है। बस्तर पर्यटन का एक विशेष ब्रांड बनाने के लिए अन्य पर्यटन स्थानों के अनुभव से सीखने का अवसर प्रस्तुत करती है। यह देखा गया है कि कई बार पर्यटक सुविधाओं के ब्यवस्थित विस्तार और पर्यटकों की बड़ी आमद इलाके की पारिस्थितिकी पर अपना असर डालती है। ऐसे मामले भी सामने आए हैं जहां पर्यटन के बुनियादी ढांचे के अनियोजित विस्तार के कारण उस स्थान ने अपना मूल आकर्षण खो दिया है। आदिवासी घरों की वास्तुकला, छोटी सौंदर्यकारी सुखदायक संरचनायें, परंपरागत व्यंजनों के साथ आदिवासी जीवन और इसकी समृद्ध परंपरांओं का समुचित समन्वयन को ध्यान में रखते हुए बुनियादी ढाँचे के अनियोजित विकास पर लगाम लगाने के साथ पर्यावरण का संरक्षण सुनिश्चित करने हुए बस्तर की पर्यटन यात्रा को एक नया आयाम प्रदान किया जा सकता है। बस्तर ब्रांड अपनी प्राकृतिक सुंदरता की निस्तब्धता, निवासियों के जीवन की सरलता और प्रकृति के साथ उनके जुड़ाव का प्रतिनिधित्व कर सकता है। पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए इसकी प्राकृतिक सुंदरता एवं जनजातीय जीवन के अनुभव एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करते हैं जो की अलग–अलग वर्गों के ग्राहकों को आकर्षित कर सकता है।

बस्तर में पर्यटन का उपयोग पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता को बढ़ावा देने के साधन के रूप में भी किया जा सकता है। पर्यटन स्थलों के निकट कुछ सीमांकित क्षेत्र जैसे झरने या मंदिर आदि को प्लास्टिक और बाहर के भोजन से मुक्त किया जा सकता है। किन्तु इसके

लिए योजनाबद्ध तरीके से भोजन आदि की उचित व्यवस्था करनी होगी। पर्यटन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए वन क्षेत्रों में प्रवेश करने वाले पर्यटकों को प्लास्टिक के पैकेट या बोतल ले जाने की अनुमति नहीं होनी चाहिए। इस तरह के दिशानिर्देशों का पालन करने के लिए सार्वजनिक प्रयासों की भी आवश्यकता होगी।

बस्तर में पर्यटन का निर्माण रचनात्मक रूप से लोगों को भोजन के उत्पादन या संसाधनों के अधिग्रहण के साथ–साथ जीवन और प्रकृति के साथ मानव जाति के संबंधों के दर्शन के लिए एक वैकल्पिक दृष्टिकोण का अवसर प्रदान कर सकता है। पिछले कुछ दशकों से गरीबी उन्मूलन और खाद्य संसाधनों की कमी को दूर करने वाले संघर्ष के दौरान हमारे समाज ने विशेष रूप से कृषि और खाद्य उत्पादन में दिए गए संसाधनों से अधिकतम उत्पादन प्राप्त करने के प्रयास का एक दृष्टिकोण विकसित किया है। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों आदि के उपयोग सहित खेती की गहन विधा का सहारा जो शायद उस समय की आवश्यकता थी। हमारे पर्यावरण, खाद्य श्रृंखला और स्वास्थ्य पर एक टोल लेने में वर्षों से सफल रहे हैं।

समानांतर रूप से शहरी वातावरण की आधुनिक जीवन शैली ने लोगों को उपकरणों, सुविधाओं, बड़े पैमाने पर उत्पादित खाद्य पदार्थ आदि ने उन्हें प्राकृतिक जीवन शैली से दूर कर दिया है। बस्तर में ऐसे गाँव हैं जहाँ किसान केवल देशी बीजों का उपयोग करते हैं और किसी भी रासायनिक खाद या कीटनाशक का इस्तेमाल नहीं करते हैं। खेत पर कीड़े और कीटों का आगमन उन्हें परेशान नहीं करता है और न ही संभावित उत्पादन के नुकसान के बारे में कोई चिंता पैदा करता है। जबकि यह कई लोगों द्वारा एक चरम दृष्टिकोण के रूप में माना जा सकता है। खेती और खपत के समकालीन तरीकों के लिए हमारे दृष्टिकोण में इस विश्व दृष्टि के कुछ तत्वों को विकसित करने की आवश्यकता है। इस प्राकृतिक विश्व दृष्टि के संपर्क में आने वाले पर्यटकों के लिए गांवों में होमस्टे और ट्रेकिंग को बढ़ावा दिया जा सकता है।

इस प्रकार का पर्यटन ग्रामीणों को अपनी आय बढ़ाने का अवसर देंगे। जहां कृषि के आधुनिक तरीकों का उपयोग नहीं किया जाता है और वे खेती के प्राकृतिक तरीकों का विशेष रूप से पालन करते हैं, इस तरह के गांवों को अपने पारंपरिक तरीकों की खेती को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और प्राकृतिक तरीकों से खेती में किसी भी संभावित नुकसान को पर्यटन से प्राप्त होने वाले राजस्व से प्रतिपूरित किया जा सकता है।

विविध लक्ष्यों की प्राप्ति– यथा लोगों को आजीविका प्रदान करना, संरक्षण को बढ़ावा देना, आदिवासी जीवन शैली के अनुभव पर्यटकों को प्रदान करना आदि लोगों की भागीदारी के माध्यम से पूर्णतः हासिल की जा सकती है। अतः प्रस्तावित है कि ग्रामीणों और स्थानीय

निवासियों को निम्नलिखित क्षेत्रों में पर्यटक सुविधाओं के सम्बन्ध में अपेक्षित प्रशिक्षण के बाद शामिल किया जा सकता है।

- होम स्टे, छोटे कॉटेज और होटलः होम स्टे का निर्माण व्यक्तिगत या सामुदायिक आधार पर एक गांव में निवासियों के समूहों द्वारा किया जा सकता है। यह काम करने वाले लोग बेहतर एवं पेशेवर पर्यटक सेवाओं को प्रदान में प्रशिक्षित हों। इस तरह के होम स्टे गाँवों के सन्निहित समूहों में अधिमान हो सकते हैं। आदिवासियों के घरों की छोटी झोपड़ी, बल्कि झोपड़ियां, समुदाय द्वारा बनाई जा सकती हैं और कुछ लोगों को उनके संचालन की ज़िम्मेदारी सौंपी जा सकती है। भोजन, आदिवासी जीवन शैली और स्थानीय संसाधनों की जानकारी, आदिवासी संगीत और नृत्य आदि की झलक सामूहिक रूप से प्रदान की जा सकती है। जंगलों में ट्रेक भी साथ में पेश किए जा सकते हैं जहां औषधीय पौधों सहित स्थानीय वनस्पतियों और जीवों के बारे में जानकारी दे सकते हैं।
- फूड स्टॉलः स्थानीय लोग खाद्य पदार्थो की छोटी–छोटी दुकानें लगा सकते हैं, खासतौर पर विभिन्न स्थानों जैसे कस्बों, बाजार, पर्यटन स्थलों आदि में पर्यटकों को स्थानीय खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराये जा सकते हैं। यह भी व्यक्तिगत या सामुदायिक स्तर पर चलाए जा सकते हैं।
- हस्तशिल्प और स्थानीय वन तथा कृषि उपज आदि की बिक्रीः हस्तशिल्प और स्थानीय उपज जैसे, जैविक चावल, बाजरा आदि और वन उपज जैसे इमली, चिरौंजी, आंवला और उनके उत्पादों की बिक्री को कस्बों और पर्यटन स्थलों पर आयोजित किया जा सकता है।
- यात्रा सेवाएँ, होटल आदिः जगदलपुर और इनसे सटे शहरों के निवासी पर्यटकों के ठहरने के लिए छोटे या मध्यम आकार के होटलों के अलावा टैक्सी सेवा आदि प्रदान कर सकते हैं।

यदि लोगों की भागीदारी प्रस्तावित पारिस्थितिकी तंत्र का मुख्य आधार है तो निम्नलिखित तीन क्षेत्रों में सहायक प्रणालियों की आवश्यकता होगीः

- अतिथि गृह चलाने और मेहमानों की देखभाल के लिए निवासियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए। विशेष रूप से उन्हें स्वच्छ एवं स्वास्थ्यकर तरीकों से भोजन एवं आवश्यक व्यंजनों को तैयार करना, और ग्राहकों की सेवा करने की प्रक्रिया में प्रशिक्षित करना होगा।
- वेबसाइट और सोशल मीडिया आदि के माध्यम से सुविधाओं का केंद्रीकृत विपणन करना होगा। इसमें पर्यटकों की यात्रा की योजना बनाना और आवश्यक समन्वय

करना भी शामिल होगा। एक ऐसे तंत्र की स्थापना भी करनी होगी जो ठहरने के दौरान पर्यटकों के साथ बातचीत करने के आलावा उनकी प्रतिक्रिया के साथ ही आकस्मिक अवश्यक्ताओं को पूर्ण करने में सक्षम हो।

- आपात स्थिति और अन्य सेवाओं के लिए चिकित्सा सहायता जैसी सुविधाओं के प्राविधान की योजना बनानी होगी। चिकित्सा सेवाओं के प्राविधान में आसानी के लिए गाँव के समूहों को बेहतर सेवाएं देने हेतु प्रशिक्षित करना होगा।
- इन कार्यों को लोगों के एक अतिव्यापी संगठन (एक लाभ के लिए या एक गैर–लाभकारी संगठन या एक सहकारी समिति आदि सहित) या विशेष रूप से पर्यटन विभाग की एक विंग के रूप में गठित एक सरकारी निकाय द्वारा किया जा सकता है। समय के साथ निश्चित रूप से पर्यटकों को पैकेज प्रदान करने और विभिन्न सेवा प्रदाताओं के साथ समन्वय करने के लिए एक निजी या सामूहिक व्यावसायिक व्यवस्था स्थापित करनी होगी।